रामायण मंका 108

रामायण मंका 108

रघुपति राघव राजा राम । पतितपावन सीताराम ।।

जय रघुनन्दन जय घनश्याम । पतितपावन सीताराम ।।

भीड़ पड़ी जब भक्त पुकारे । दूर करो प्रभु दुःख हमारे ।।
दशरथ के घर जन्मे राम । पतितपावन सीताराम ।।१।।

विश्वामित्र मुनीश्वर आये । दशरथ भूप से वचन सुनाये ।।
संग में भेजे लक्ष्मण राम । पतितपावन सीताराम ।।२।।

वन में जाय ताड़का मारी । चरण छुआए अहिल्या तारी ।।
ऋषियों के दुःख हरते राम । पतितपावन सीताराम ।।३।।

जनक पुरी रघुनन्दन आए । नगर निवासी दर्शन पाए ।।
सीता के मन भाये राम । पतितपावन सीताराम ।।४।।

रघुनन्दन ने धनुष चढ़ाया । सब राजों का मान घटाया ।।
सीता ने वर पाये राम । पतितपावन सीताराम ।।५।।

परशुराम क्रोधित हो आये । दुष्ट भूप मन में हरषाये ।।
जनक राय ने किया प्रणाम । पतितपावन सीताराम ।।६।।

बोले लखन सुनो मुनि ग्यानी । संत नहीं होते अभिमानी ।।
मीठी वाणी बोले राम । पतितपावन सीताराम ।।७।।

लक्ष्मण वचन ध्यान मत दीजो । जो कुछ दण्ड दास को दीजो ।।
धनुष तुडइय्या मैं हूं राम । पतितपावन सीताराम ।।८।।

लेकर के यह धनुष चढ़ाओ । अपनी शक्ती मुझे दिखाओ ।।
छूवत चाप चढ़ाये राम । पतितपावन सीताराम ।।९।।

हुई उर्मिला लखन की नारी । श्रुति कीर्ति रिपुसूदन प्यारी ।।
हुई माण्डवी भरत के बाम । पतितपावन सीताराम ।।१०।।

अवधपुरी रघुनन्दन आये । घर-घर नारी मंगल गाये
बारह वर्ष बिताये राम। पतितपावन सीताराम ।।११।।

गुरु वशिष्ठ से आज्ञा लीनी । राज तिलक तैयारी कीनी ।।
कल को होंगे राजा राम । पतितपावन सीताराम ।।१२।।

कुटिल मंथरा ने बहकायी । कैकई ने यह बात सुनाई ।।
दे दो मेरे दो वरदान । पतितपावन सीताराम ।।१३।।

मेरी विनती तुम सुन लीजो । भरत पुत्र को गदी दीजो ।।
होत प्रात वन भेजो राम । पतितपावन सीताराम ।।१४।।

धरनी गिरे भूप तत्काल । लागा दिल में सूल विशाल ।।
तब सुमंत बुलवाए राम । पतितपावन सीताराम ।।१५।।

राम पिता को शीश नवाए । मुख से वचन कहा नहीं जाए।।
कैकयी वचन सुनायो राम । पतितपावन सीताराम ।।१६।।

राजा के तुम प्राणों प्यारे । इनके दुःख हरोगे सारे ।।
अब तुम वन में जाओ राम । पतितपावन सीताराम ।।१७।।

वन में चौदह वर्ष बिताओ। रघुकुल रीति नीति अपनाओ ।।
आगे इच्छा तुम्हरी राम । पतितपावन सीताराम ।।१८।।

सुनत वचन राघव हर्षाए । माता जी के मन्दिर आये।।
चरण कमल में किया प्रणाम । पतितपावन सीताराम ।।१९।।

माता जी मैं तो वन जाऊं । चौदह वर्ष बाद फिर आऊं ।।
चरण कमल देखू सुख धाम । पतितपावन सीताराम ।।२०।।

सुनी शूल सम जब यह बानी । भू पर गिरी कौशिला रानी ।।
धीरज बंधा रहे श्री राम । पतितपावन सीताराम ।।२१।।

सीताजी जब यह सुन पाई। रंग महल से नीचे आई ।।
कौशल्या को किया प्रणाम । पतितपावन सीताराम।।२२।।

मेरी चूक क्षमा कर दीजो । वन जाने की आज्ञा दीजो ।।
सीता को समझाते राम । पतितपावन सीताराम।।२३।।

मेरी सीख सिया सुन लीजो । सास ससुर की सेवा कीजिए ।।
मुझको भी होगा विश्राम । पतितपावन सीताराम ।।२४।।

मेरा दोष बता प्रभु दीजो । संग मुझे सेवा में लीजो ।।
अर्धांगिनी तुम्हारी राम । पतितपावन सीताराम ।।२५।।

समाचार सुनि लक्ष्मण आए । धनुष बाण संग परम सुहाए ।।
बोले संग चलूंगा श्रीराम । पतितपावन सीताराम ।।२६।।

राम लखन मिथिलेशकुमारी । वन जाने की करी तैयारी ।।
रथ में बैठ गये सुख धाम । पतितपावन सीताराम ।।२७।।

अवधपुरी के सब नर नारी । समाचार सुन व्याकुल भारी ।।
मचा अवध में अति कोहराम । पतितपावन सीताराम ।।२८।।

श्रृंगवेरपुर रघुवर आए । रथ को अवधपुरी लौटाए।
गंगा तट पर आए राम । पतितपावन सीताराम।।२९।।

केवट कहे चरण धुलवाओ । पीछे नौका में चढ़ जाओ
पत्थर कर दी नारी राम । पतितपावन सीताराम।।३०।।

लाया एक कठौता पानी । चरण कमल धोये सुखमानी ।।
नाव चढ़ाये लक्ष्मण राम । पतितपावन सीताराम ।।३१।।

उतराई में मुदरी दीन्हीं। केवट ने यह विनती कीन्हीं ।।
उतराई नहीं लूंगा राम । पतितपावन सीताराम ।।३२।।

तुम आए हम घाट उतारे । हम आयेंगे घाट तुम्हारे ।।
तब तुम पार लगाओ राम । पतितपावन सीताराम ।।३३।।

भरद्वाज आश्रम पर आए । राम लखन ने शीष नवाए ।।
एक रात कीन्हां विश्राम । पतितपावन सीताराम।।३४।।

भाई भरत अयोध्या आए । कैकई को कटु वचन सुनाए।
क्यों तुमने वन भेजे राम । पतितपावन सीताराम ।।३५।।

चित्रकूट रघुनन्दन आए । वन को देख सिया सुख पाए।।
मिले भरत से भाई राम । पतितपावन सीताराम ।।३६ ।।

अवधपुरी को चलिए भाई । ये सब कैकई की कुटिलाई ।।
तनिक दोष नहीं मेरा राम । पतितपावन सीताराम।।३७।।

Hanuman Chalisa PDF
JAI BAJRANG BALI
www.hanumanchalisapdf.com

रामायण मंका 108

चरण पादुका तुम ले जाओ । पूजा कर दर्शन फल पावो।।
भरत को कंठ लगाए राम । पतितपावन सीताराम।।३८।।

आगे चले राम रघुराया । निशाचरों को वंश मिटाया।।
ऋषियों के हुए पूरन काम । पतितपावन सीताराम ।।३९।।

'अनसुइया' की कुटिया आये । दिव्य वस्त्र सिय मां ने पाये ।।
था मुनि अत्री का वह धाम । पतितपावन सीताराम ।।४ ०।।

मुनिस्थान आए रघुराई । सूर्पनखा की नाक कटाई ।।
खरदूषन को मारे राम । पतितपावन सीताराम।।४१।।

पंचवटी रघुनन्द आए । कनक मृगा के संग में धाए।।
लक्ष्मण तुम्हें बुलाते राम । पतितपावन सीताराम ।।४२ ।।

रावण साधु वेष में आया । भूख ने मुझको बहुत सताया ।।
भिक्षा दो यह धर्म का काम । पतितपावन सीताराम ।।४३।।

भिक्षा लेकर सीता आई । हाथ पकड़ रथ में बैठाई ।।
सूनी कुटिया देखी राम । पतितपावन सीताराम ।।४४।।

धरनी गिरे राम रघुराई । सीता के बिन व्याकुलताई ।।
हे प्रिय सीते, चीखे राम । पतितपावन सीताराम ।।४५।।

लक्ष्मण, सीता छोड़ न आते। जनक दुलारी को नहीं गंवाते ।।
बने बनाये विगड़े काम । पतितपावन सीताराम।।४६ ।।

कोमल बदन सुहासिनि सीते । तुम बिन व्यर्थ रहेंगे जीते ।।
लगे चांदनी-जैसे घामपतितपावन सीताराम ।।४७।।

सुन री मैना, रे तोता । सुन मैं भी पंखो वाला होता ।।
वन वन लेता ढूँढ तमाम । पतितपावन सीताराम।।४८।।

श्यामा हिरनी तू ही बता दे । जनक नन्दनी मुझे मिला दे।।
तेरे जैसी आंखें श्याम। पतितपावन सीताराम ।।४९।।

वन वन ढूंढ रहे रघुराई । जनक दुलारी कहीं न पाई।।
गिद्धराज ने किया प्रणाम । पतितपावन सीताराम ।।५०।।

चखचख कर फल शबरी लाई । प्रेम सहित खाए रघुराई ।।
ऐसे मीठे नहीं हैं आम । पतितपावन सीताराम ।।५१।।

विप्र रूप धरि हनुमत आए। चरण कमल में शीश नवाए।।
कन्धे पर बैठाये राम। पतितपावन सीताराम ।।५२।।

सुग्रीव से करी मिताई । अपनी सारी कथा सुनाई ।।
बाली पहुंचाया निज धाम । पतितपावन सीताराम ।।५३।।

सिंहासन सुग्रीव बिठाया । मन में वह अति ही हर्षाया ।।
वर्षा ऋतु आई हे राम । पतितपावन सीताराम।।५४।।

हे भाई लक्ष्मण तुम जाओ । वानरपति को यूं समझाओ ।।
सीता बिन व्याकुल हैं राम । पतितपावन सीताराम ।।५५।।

देश देश वानर भिजवाए । सागर के सब तट पर आए ।।
सहते भूख प्यास और घाम । पतितपावन सीताराम ।।५६।।

सम्पाती ने पता बताया । सीता को रावण ले आया ।।
सागर कूद गये हनुमानजी । पतितपावन सीताराम ।।५७।।

कोने कोने पता लगाया । भगत विभीषन का घर पाया।।
हनूमान ने किया प्रणाम । पतितपावन सीताराम ।।५८।।

अशोक वाटिका हनुमत आए । वृक्ष तले सीता को पाए।।
आंसू बरसे आठों याम । पतितपावन सीताराम ।।५९।।

रावण संग निशचरी लाके । सीता को बोला समझा के ।।
मेरी ओर तो देखो बाम । पतितपावन सीताराम ।।६०।।

मन्दोदरी बना दूं दासी । सब सेवा में लंका वासी ।।
करो भवन चलकर विश्राम । पतितपावन सीताराम ।।६१।।

चाहे मस्तक कटे हमारा । मैं देखूं न बदन तुम्हारा ।।
मेरे तन मन धन हैं राम । पतितपावन सीताराम ।।६२।।

ऊपर से मुद्रिका गिराई । सीता जी ने कंठ लगाई ।।
हनूमान जी ने किया प्रणाम । पतितपावन सीताराम ।।६३।।

Hanuman Chalisa PDF
JAI BAJRANG BALI
www.hanumanchalisapdf.com

मुझको भेजा है रघुराया । सागर कूद यहां मैं आया ।।
मैं हूं राम दास हनुमान । पतितपावन सीताराम ।।६४।।

भूख लगी फल खाना चाहूँ । जो माता की आज्ञा पाऊँ ।।
सब के स्वामी हैं श्रीराम । पतितपावन सीताराम।।६५।।

सावधान होकर फल खाना । रखवालों को भूल न जाना ।।
निशाचरों का है यह धाम । पतितपावन सीताराम ।।६६।।

हनूमान ने वृक्ष उखाड़े । देख देख माली ललकारे ।।
मार-मार पहुंचाये धाम । पतितपावन सीताराम ।।६७।।

अक्षयकुमार को स्वर्गपहुंचाया। इन्द्रजीत फाँसी ले आया ।।
ब्रह्मफाँस से बंधे हनुमान । पतितपावन सीताराम ।।६८।।

सीता को तुम लौटा दीजो । उन से क्षमा याचना कीजो ।।
तीन लोक के स्वामी राम । पतितपावन सीताराम ।।६९।।

भगत विभीषण ने समझाया । रावण ने उसको धमकाया ।।
सनमुख देख रहे हनुमान । पतितपावन सीताराम।।७०।।

रुई, तेल, घृत, वसन मंगाई । पूँछ बाँध कर आग लगाई ।।
पूँछ घुमाई है हनुमान । पतितपावन सीताराम ।।७१।।

सब लंका में आग लगाई । सागर में जा पूँछ बुझाई।।
हृदय कमल में राखे राम । पतितपावन सीताराम ।।७२।।

सागर कूद लौट कर आए । समाचार रघुवर ने पाए ।।
जो मांगा सो दिया इनाम । पतितपावन सीताराम ।।७३।।

वानर रीछ संग में लाए । लक्ष्मण सहित सिंधु तट आए ।।
लगे सुखाने सागर राम । पतितपावन सीताराम ।।७४।।

सेतू कपि नल नील बनावें । राम राम लिख सिला तिरावें ।।
लंका पहुंचे राजा राम । पतितपावन सीताराम ।।७५।।

अंगद चल लंका में आया । सभा बीच में पांव जमाया।।
बाली पुत्र महा बलधाम । पतितपावन सीताराम ।।७६।।

रावण पांव हटाने आया । अंगद ने फिर पांव उठाया ।।
क्षमा करें तुझको श्री राम । पतितपावन सीताराम ।।७७।।

रामायण मंका 108

निशाचरों की सेना आई । गरज गरज कर हुई लड़ाई ।।
वानर बोले जय सिया राम । पतितपावन सीताराम ।।७८।।

इन्द्रजीत ने शक्ति चलाई । धरनी गिरे लखन मुरझाई ।।
चिन्ता करके रोये राम । पतितपावन सीताराम ।।७९।।

जब मैं अवधपुरी से आया । हाय पिता ने प्राण गंवाया ।।
बन में गई चुराई बाम । पतितपावन सीताराम ।।८०।।

भाई तुमने भी छिटकाया । जीवन में कुछ सुख नहीं पाया ।।
सेना में भारी कोहराम । पतितपावन सीताराम ।।८१।।

जो संजीवनी बूटी को लाए । तो भाई जीवित हो जाये ।।
बूटी लाये तब हनुमान । पतितपावन सीताराम ।।८२।।

जब बूटी का पता न पाया । पर्वत ही लेकर के आया ।।
काल नेम पहुँचाया धाम । पतितपावन सीताराम ।।८३।।

भक्त भरत ने बाण चलाया । चोट लगी हनुमत लंगड़ाया ।।
मुख से बोले जय सिया राम । पतितपावन सीताराम ।।८४।।

बोले भरत बहुत पछताकर । पर्वत सहित बाण बैठाकर ।।
तुम्हें मिला दूं राजा राम । पतितपावन सीताराम ।।८५।।

बूटी लेकर हनुमत आया । लखन लाल उठ शीश नवाया ।।
हनुमत कंठ लगाये राम । पतितपावन सीताराम ।।८६।।

कुम्भकरन उठकर तब आया। एक बाण से उसे गिराया ।।
इन्द्र जीत पहुँचाया धाम । पतितपावन सीताराम ।।८७।।

दुर्गापूजन रावण कीनो । नौ दिन तक आहार न लीनो ।।
आसन बैठ किया है ध्यान । पतितपावन सीताराम ।।८८।।

रावण का व्रत खंडित कीना । परम धाम पहुँचा ही दीना ।।
वानर बोले जय सिया राम । पतितपावन सीताराम ।।८९।।

सीता ने हरि दर्शन कीना । चिन्ता शोक सभी तज दीना ।।
हँस कर बोले राजा राम । पतितपावन सीताराम ।।९०।।

पहले अग्नि परीक्षा पाओ। पीछे निकट हमारे आओ ।।
तुम हो पतिव्रता हे बाम । पतितपावन सीताराम ।।९१।।

करी परीक्षा कंठ लगाई । सब वानर सेना हरषाई।।
राज्य विभीषन दीन्हा राम । पतितपावन सीताराम ।।९२।।

फिर पुष्पक विमान मंगवाया । सीता सहित बैठि रघुराया।।
दण्डकवन में उतरे राम । पतितपावन सीताराम ।।९३।।

ऋषिवर सुन दर्शन को आए । स्तुति कर मन में हर्षाये।।
तब गंगा तट आये राम । पतितपावन सीताराम ।।९४।।

नन्दी ग्राम पवनसुत आए । भगत भरत को वचन सुनाए ।।
लंका से आए हैं राम । पतितपावन सीताराम ।।९५।।

कहो विप्र तुम कहां से आए । ऐसे मीठे वचन सुनाए।।
मुझे मिला दो भैया राम । पतितपावन सीताराम ।।९६।।

अवधपुरी रघुनन्दन आये । मन्दिर मन्दिर मंगल छाये ।।
माताओं को किया प्रणाम । पतिल्पावन सीताराम ।।९७।।

भाई भरत को गले लगाया । सिंहासन बैठे रघुराया ।।
जग ने कहा, हैं राजा राम । पतितपावन सीताराम ।।९८।।

सब भूमि विप्रो को दीन्हीं । विप्रों ने वापस दे दीन्हीं ।।
हम तो भजन करेंगे राम । पतितपावन सीताराम।।९९।।

धोबी ने धोबन धमकाई । रामचन्द्र ने यह सुन पाई ।।
वन में सीता भेजी राम । पतितपावन सीताराम ।।१००।।

बाल्मीकि आश्रम में आई । लव व कुश हुए दो भाई ।।
धीर वीर ज्ञानी बलवान । पतितपावन सीताराम ।।१०१।।

अश्वमेघ यज्ञ कीन्हा राम । सीता बिनु सब सूने काम ।।
लव कुश वहाँ लियो पहचान । पतितपावन सीताराम ।।१०२।।

सीता राम बिना अकुलाई । भूमि से यह विनय सुनाई ।।
मुझको अब दीजो विश्राम । पतितपावन सीताराम ।।१०३।।

सीता भूमी माहि समाई । देखकर चिन्ता की रघुराई ।।
बार-बार पछताये राम । पतितपावन सीताराम ।।१०४।।

राम राज्य में सब सुख पावें । प्रेम मग्न हो हरि गुन गावें।।
दुःख कलेश का रहा न नाम । पतितपावन सीताराम ।।१०५।।

ग्यारह हजार वर्ष परयन्ता । राज कीन्ह श्री लक्ष्मी कंता ।।
फिर बैकुण्ठ पधारे राम । पतितपावन सीताराम ।।१०६।।

अवधपुरी बैकुण्ठ सिधाई । नर-नारी सबने गति पाई ।।
शरनागत प्रतिपालक राम । पतितपावन सीताराम ।।१०७।।

श्याम सुन्दर' ने लीला गाई । मेरी विनय सुनो रघुराई ।।
भूलूँ नहीं तुम्हारा नाम । पतितपावन सीताराम ।।१०८।।

यह माला पूरी हुई, मनका एक सौ आठ।
मनोकामना पूर्ण हो, नित्य करे जो पाठ।।

Hanuman Chalisa PDF
JAI BAJRANG BALI
www.hanumanchalisapdf.com